Integral Research (Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal) ISSN: 3048-5991
Journal home page: https://integralresearch.in/, Vol. 02, No. 05, May. 2025

भारतीय ज्ञान परम्परा और हिन्दी साहित्य

डॉ. आशुतोष शर्मा *
सहायक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
शिक्षा विभाग
आई.एफ.टी.एम. विश्वविद्यालय,
मुरादाबाद.

Abstract

भारतीय ज्ञान परम्परा एक निर्मल, निश्चल, पवित्र निर्झरणी है, जिसमें ऋषि-मुनियों की आस्था, मूल्य, आदर्श, दर्शन, ज्ञान, संस्कृति, सभ्यता, संस्कार, पद्धतियाँ, कर्म, शक्ति और जीवन्त भावनाएँ समाहित हैं। यह परम्परा किसी एक तत्व को लेकर चलने वाली नहीं, बल्कि एक विशाल विचारधारा है, जिसने अपने अन्तर्गत भारत के कण-कण में समाहित ज्ञान को स्थान प्रदान किया है। यह ज्ञान परम्परा ऋषियों की ऋचाओं के समान अनन्त प्रकाश वाली है, जिसमें ज्ञान की समस्त धाराएँ अपने-अपने स्थान पर तो प्रवाहित होती ही हैं, साथ ही एक दूसरे के साथ सम्पृक्त होकर द्विगुणित हो उठती हैं। यही प्रकाश बिन्दु भारतीय ज्ञान परम्परा है। इस ज्ञान परम्परा की निर्झरणी में यदि हिन्दी साहित्य के प्रतिबिम्ब का दिग्दर्शन किया जाए, तो वह भी घृतधारा के समान दीप्तिमान होता हुआ नज़र आता है। भारतीय ज्ञान परम्परा है क्या? इस जिज्ञासा के मन में उठते ही कल्पना तत्काल वेदों की ओर गमन करती है और वेद ही भारतीय संस्कृति, ज्ञान और सभ्यता का मूल हैं। उन्हीं से समस्त भाषाओं का, ज्ञान के समस्त स्वरूपों का जन्म हुआ है। संस्कृत की पुत्री कही जाने वाली हिन्दी उसी ज्ञान को विभिन्न विधाओं के रूप में प्रत्येक जिज्ञासु तक पहुँचाती है। इसी ज्ञान परम्परा का निर्वहन करते हुए हिन्दी साहित्य अपने कर्म पथ पर अग्रसर होता है। हिन्दी साहित्य से आप्लावित भारतीय ज्ञान परम्पराएँ लोकतन्त्र के विशिष्टण से परिपूर्ण होकर इस विश्व को निरन्तर पूर्णता का आभास कराती रही हैं। इसका प्रभाव विश्व को प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त किए हुए है। भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग प्राचीन जीवन मूल्य, पंचमहायज्ञ, संस्कार, तीन ऋण, भारतीय आयुर्वेद पद्धतियाँ, भारतीय शिक्षा पद्धति, वैदिक ज्ञान, उपनिषदों में निहित गृह विद्याएँ, पुराणों में समाविष्ट व्यावहारिक ज्ञान, कौशल की अविचारित सामग्रियाँ, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को सही आकार देने वाली अष्टांग योग पद्धतियाँ, प्रकृति के प्रति भारतीय साहित्य में निहित अमूल्य पोषण, स्वास्थ्य एवं संरक्षण विचारधारा, दर्शन शाखाओं में व्याप्त आध्यात्मिक ऊर्जाएँ विविध शक्तियों का रूप धारण कर विश्व के कण-कण में भारतीय ज्ञान परम्पराओं की महक बनकर अभिव्यक्त होती हैं, जो पाश्चात्य संस्कृतियों, ज्ञान, अनुसंधान, कर्मकाण्ड सभी का आधार बनकर सौन्दर्य रश्मियों के रूप में विश्व को आलोकित कर रही हैं। इन ज्ञान परम्पराओं में हिन्दी साहित्य अपने अनूठे विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता रहा है। आज भी हिन्दी साहित्य निर्झर से निकलने वाली ज्ञान धारा जन-जन के हृदय को पुलकित-पावन करने में सक्षम है।

Keywords: भारतीय ज्ञान परम्परा**,** भारतीय संस्कृति**,** हिन्दी साहित्य**.**

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य विश्व ज्ञान का वह सूर्य है, जो विविध विधा रूपी किरणों में प्रवाहित होते हुए सम्पूर्ण संसार को आलोकित करता है। भारतीय ज्ञान परम्परा को प्रवाहित करने वाले इस साहित्य सूर्य की ओर यदि दृष्टिपात किया जाए, तो गद्य, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, एकांकी, नाटक, रिपोर्ताज, यात्रा साहित्य आदि किरणों के रूप में यह संसार की विविध यथार्थ भावनाओं को मूर्त रूप में प्रकाशित करने में अग्रणी हैं। यह जनमानस को नवीन चेतना, जागरूकता, सजगता की ओर उन्मुख करता है। इस विषय के किसी भी पक्ष पर दृष्टिपात करने से पूर्व यदि परम्परा शब्द की व्याख्या की जाए, तो परम्परा वह सम्पदा है, जो बिना रुके निरन्तर गति से अपने कर्म पथ की ओर अग्रसर होती रहती है। यह परम्परा अपने अन्दर समेटे हुए ज्ञान को चारों ओर प्रसारित करते हुए, चारों ओर व्याप्त दुःख,

* Corresponding Author: Dr. Ashutosh Sharma
Email: ashutoshsiftm@gmail.com
Received 20 March. 2025; Accepted 10 May. 2025. Available online: 30 May. 2025.
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

वेदना को अपने में समाहित करते हुए, कल्पना और भाव से उसमें ऊर्जा भर उसे जनमानस तक पहुँचाती है और इस प्रकार मूक मानव के हृदय में एक ऐसी जागृति प्रदान करती है, जिससे दूर-दूर तक व्यक्ति एक दूसरे के साथ जुड़कर शाश्वत भावनाओं को अंगीकार करता है। यह परम्परा ज्ञानरूप है, चेतना स्वरूप है, संस्कृति स्वरूप है, नैतिक गुण स्वरूप है। अतः यह परम्परा नित्य नवीन है और नवाचार से युक्त है।

परम्परा एक मान्यता के रूप में भी संचरित होती चली जाती है, जो जीवन को नवीन आलोक देने वाली होती हैं, नए मूल्यों से जोड़ने वाली होती हैं, नए ज्ञान का प्रतीक होती हैं। वे मान्यताएँ धीरे-धीरे परम्पराओं के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं और जनशक्ति द्वारा उनका पालन प्रारम्भ हो जाता है। भारतीय ज्ञान परम्पराओं की बात करें तो ये भारत की माटी में बसी हुई हैं, जो उसके वैदिक, पौराणिक, दार्शनिक, साहित्यिक ज्ञान के रूप में निरन्तर मानव मनीषा का विषय बनकर अग्रसर होती चली जा रही हैं। भारत वर्ष की सबसे सुन्दर, सुदृढ़ और शक्तिशाली परम्परा, साहित्य परम्परा है, जो प्राचीन काल से ज्ञान का मूल स्रोत रही है, जिसने विभिन्न संस्कृतियों, सभ्यताओं को अपनी वाणी हिन्दी के माध्यम से परिभाषित और परिमार्जित किया है। जनभाषा हिन्दी ने अपनी सरलता, सहजता, सुगमता तथा सांस्कृतिकता में भारतीय ज्ञान परम्पराओं को साहित्यिक धरातल पर व्याप्त कर दिया है।

साहित्य लेखन की परम्परा

प्राचीन युग में साहित्य के इतिहास से सम्बन्धित स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखने की परम्परा भारत में ही नहीं, बल्कि पश्चिम में भी नहीं मिलती। फिर भी पूर्ववर्ती कवियों एवं साहित्यकारों के नामोल्लेख की प्रवृत्ति अनेक भारतीय लेखकों में दृष्टिगोचर होती है, जिससे साहित्य का इतिहास लिखने में सहायता प्राप्त होती है। भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में अपने से पूर्ववर्ती आचार्यों के नामों का उल्लेख किया है। पाणिनि, पतंजलि और व्याड़ि में भी इसी प्रकार का उल्लेख प्राप्त होता है। हिन्दी में महाकवि तुलसीदास ने भी अपने से पहले राम गुणगान करने वाले कवियों के नामों का उल्लेख किया है। रामचरितमानस में वे कहते हैं—

"बाल्मीकि भए ब्रह्म समाना।
अन्य मुनि जपहिं जिन्ह जप जाना।।"

इस प्रकार तुलसीदास के बाद भी हिन्दी में इस प्रकार के अनेक उदाहरण प्राप्त होते हैं, जिन्होंने अपने पूर्ववर्ती कवियों का वर्णन किया है। यह परम्परा हिन्दी साहित्य में आगे तक चली।

गुरु-शिष्य परम्परा

भारतीय ज्ञान परम्पराओं में गुरु-शिष्य परम्परा का अपना अनूठा ही स्थान है, जो युगों-युगों में भारत को ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व को आलोकित करती रही है। यदि गहराई से विचार किया जाए, तो शिक्षण परम्परा वह परम्परा है, जो प्रत्येक क्षेत्र, विषय और पाठ्यक्रम के ज्ञान में जुड़कर विश्व के कण-कण को आलोकित कर रही है। गुरु-शिष्य प्रणाली के रूप में ऋषि-मुनियों ने खुले आकाश के नीचे वृक्षों की छाया में प्राकृतिक वातावरण के बीच अपने शिष्यों को आध्यात्मिक अनुभूतियों के दर्शन कराए हैं। यही नहीं, उन्होंने समस्त

विद्याओं का दान देकर अपने शिष्यों को ज्ञान का आलोक प्रदान किया है और उनके समस्त संशयों को दूर किया है, जिसका उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कबीरदास जी कहते हैं—

"गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविन्द दियो बताय।।"

भारतीयों की यह ज्ञान परम्परा विश्व में अपने पदचिन्ह अंकित कर चुकी है। आज पाश्चात्य संस्कृति भारतीय संस्कृति की स्तुति करते हुए, प्रकृति की ओर लौटने की बात करती है। विभिन्न दार्शनिकों ने प्रकृति के बीच शान्त वातावरण में विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास को महत्त्वपूर्ण एवं उद्देश्यपूर्ण बताया है। बड़े-बड़े पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री भारतीयों की इस प्रणाली का वैज्ञानिक रूप में समर्थन करते हैं। उनका मानना है कि प्राकृतिक वातावरण पूर्णतः स्वच्छ और स्वस्थ होता है। उसका निर्मल शान्त स्वरूप विद्यार्थी को न केवल आध्यात्मिक, मानसिक एवं बौद्धिक रूप से, बल्कि शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रखता है और स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। अतः आज विश्व भारत की इस परम्परा का हृदय से स्वागत करता है और कहता है कि भारतीयों की परम्पराएँ वैज्ञानिक दृष्टि से पूर्णतः प्रासंगिक हैं।

समाज सुधार की परम्पराओं का विकास

भारतीय वैदिक परम्पराएँ अत्यधिक लोकतान्त्रिक और प्राकृतिक रही हैं। बालक के मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक विकास के लिए उसमें बाल्यकाल से ही जीवनमूल्यों का बीजारोपण किया जाता था। लेकिन अनेक स्थानों पर परम्परा के साथ-साथ अन्धविश्वास का भी प्रवेश होता चला जाता था, जिसे दूर करने के लिए सदैव ही साहित्य अग्रणी रहा है। महाकवि कबीरदास जी ने अपनी साखियों के माध्यम से समाज को सुधारने और सही दिशा दिखाने की परम्परा का जो प्रवाह किया, वह परम्परा के रूप में हिन्दी साहित्य जगत की मूलधारा में समा गया। अन्धविश्वासों का विरोध करते हुए एक स्थान पर वे कहते हैं—

"काँच काँच कहत हैं, मोती मोती जान।
अन्तर कछु नाहिं, दोनों एक समान।।"

कबीरदास आगे भी जाति-पाति के विरोध में कहते हैं—

"जाति-पाँति पूछे नहिं कोई।
हरि को भजे सो हरि का होई।।"

यहाँ कबीरदास इन पंक्तियों के माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि परमात्मा एक ही है। कोई उसे राम कहता है, कोई गोविन्द कहता है, कोई अल्लाह कहता है, लेकिन वह एक ही सर्वव्यापी परमब्रह्म है। अतः मानव संस्कृति को भी एकात्मकता का आधार लेकर समरसता की ओर बढ़ना चाहिए।

साहित्य में निहित अमूल्य शक्ति परम्परा

आज सम्पूर्ण विश्व वैदिक परम्पराओं में समाहित शक्ति परम्परा के आवरण को अपना रहा है। इन परम्पराओं का वैश्विक धरातल पर गहरा प्रभाव पड़ा है। योग की शक्ति में निहित जीवन शैली ने मानव को तनावमुक्त वातावरण प्रदान किया है। सात्विक आहार-विहार ने उसे स्वस्थ एवं सुखी जीवन दिया है। आज स्वास्थ्य, दीर्घायु और प्राकृतिक जीवनशैली के रूप में योग पद्धति पूरे विश्व को अपना रही है। सम्पूर्ण संसार बड़े-बड़े ऋषियों, मुनियों, कवियों और साहित्यकारों द्वारा प्रतिपादित शक्ति साधनाओं को अपना रहा है। यह भारतीय ज्ञान परम्पराओं का प्रत्यक्ष प्रभाव है।

प्रेमशक्ति और भक्ति परम्परा

प्रेमशक्ति और भक्ति परम्परा में प्रेम को मुख्य आधार बनाया गया है तथा गीतों, भजनों के माध्यम से अपनी भक्ति, चिंतन और भगवान के प्रति समर्पण की बात प्रमुखता से उल्लिखित की गई है। मीरा और जायसी ने इस भक्ति का सर्वाधिक प्रचार-प्रसार किया। जायसी ने लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक अनुभूति कराई। मीरा ने तो श्रीकृष्ण को ही अपना सर्वस्व मान लिया—

"मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई।।"

इसी प्रकार भक्ति काव्य में कबीर का ब्रह्म भी राम ही है, लेकिन उनका कोई आकार नहीं है। कबीरदास इसके स्पष्टीकरण में कहते हैं—

"दुजा भ्रम तजि लीजै, एक राम को नाम।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, एकै सबहीं का ठाम।।"

कबीर के काव्य में निराकार ब्रह्म की कोई स्पष्ट रूपरेखा नहीं दिखाई देती। कहीं राम को भक्ति का आलम्बन बनाया गया है, तो कहीं ध्यान का।

ज्ञान परम्परा और साहित्य

सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य ज्ञान का वह कल्पवृक्ष है, जिसका एक-एक पत्ता नवीन कलाओं और भावनाओं से आप्लावित है। हिन्दी साहित्य ने अपने अन्तर्गत 64 कलाओं और 14 विद्याओं को समेटा हुआ है। सात धातुओं वाली यह पृथ्वी, चार वेद—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद, छः वेदांग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष के साथ धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, मीमांसा और वेदान्त मिलकर 14 विद्याओं में समाहित तथा 64 कलाओं से सुसज्जित है, जिससे निर्मित परम्पराएँ पूरे विश्व को ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, कला, कौशल और अनुसंधान से जोड़ रही हैं।

महाकवि कबीरदास स्वयं ज्ञान को महत्त्व देते हैं। उनका मानना है कि परमात्मा की प्राप्ति ज्ञान और प्रेम के आधार पर ही होती है—

"पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।"

इसी प्रकार एक स्थान पर कबीरदास जी कर्म करने और कथनी-करनी में अन्तर न करने की शिक्षा देते हुए कहते हैं—

"करता करता हरि भया, करने से रहा न कोय।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, करनी कथनी एक होय।।"

उनके ये शब्द समाज को एक नई दिशा की ओर ले जाते हैं। एक ऐसी शिक्षा जो सच्चे अर्थों में सत्य का ज्ञान कराने में सक्षम है।

भारतीय ज्ञान परम्परा और संत साहित्य

भारतीय ज्ञान परम्पराओं में समाहित संत साहित्य अपने आप में अद्वितीय है। संत किसी के शत्रु नहीं होते, वे तो निर्विकार होते हैं। वे परमात्मा में लीन होते हैं, प्रेम के उपासक होते हैं। कबीरदास संतों की महिमा का गुणगान करते हुए कहते हैं—

"संतन को कहा सीकरी सो करी।
गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़ै खोरी।।"

सचमुच संतों की विशेषता सत्य की खोज के रूप में परिलक्षित होती है। संत तो मार्ग से भटके हुए लोगों को सही रास्ते पर लाने की क्षमता रखते हैं। इसलिए कबीरदास आगे कहते हैं—

"संत ऐसे चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार-सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय।।"

इस प्रकार भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित संत साहित्य अपने आप में अमूल्य शक्ति को धारण करने वाला है। हिन्दी साहित्य की यह परम्परा समाज को सदैव नई दिशा, नया आयाम देने में सक्षम रही है और आज भी दे रही है।

निष्कर्ष

अन्त में कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परम्पराओं का विश्व पर अमिट प्रभाव है। वैश्विक धरातल पर चाहे राजनीति हो या समाजशास्त्र, संस्कृति हो या सभ्यता, ज्ञान हो या कौशल, योग हो या व्यवहार, भाषा हो या विज्ञान, खोज हो या अनुसंधान, तर्क हो या विश्लेषण—सभी क्षेत्रों में भारतीय ज्ञान परम्पराएँ अपना प्रभाव अभिव्यक्त कर रही हैं। इन ज्ञान परम्पराओं से पाश्चात्य संस्कृति, डेमोक्रेसी की राजनीति शिक्षा लेती है, तो पतंजलि की योग शिक्षाएँ उसे स्वास्थ्य की ओर ले जाती हैं। चरक की संहिता अनुसंधान के क्षेत्र को सफल बनाती है, तो सामवेद की संगीत विद्या उसे मधुर संगीत से जोड़ती है। वहीं हिन्दी की सरलता प्रत्येक व्यक्ति को सहजता, सुगमता और करुणा से जोड़ देती है। भारतीय ज्ञान परम्परा में हिन्दी साहित्य वह घृतधारा है, जिसमें समस्त भावनाएँ समाहित हैं। इसमें भक्ति भी है, ज्ञान भी है, शिक्षा भी है और समाज सुधार भी। इसमें बाल मनोरंजन भी है और युवाओं का मार्गदर्शन भी। इस प्रकार हिन्दी साहित्य भारतीय ज्ञान परम्परा का एक प्रमुख और अतुलनीय स्रोत है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

डॉ. मैनेजर पाण्डेय, मध्ययुगीन हिन्दी कृष्ण भक्ति धारा, हिन्दी साहित्य सभा, 1968.

डॉ. बलदेव वाणी—कबीर (साहित्य और संदर्भ), प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, 1994.

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, 2013.

संपा. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का विकास, मयूर पेपरबैक्स, 2015.

संपा. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपरबैक्स, 2016.

हजारीप्रसाद द्विवेदी, कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018.

वैदिक साहित्य और संस्कृति, विश्वविद्यालय प्रकाशन.

योगेन्द्र प्रसाद—संत परम्परा, लोकभारती प्रकाशन, 2019.